

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : जून 2010

प्रश्न पत्र-II

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य है। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (षडबल)

1. निम्न का उत्तर दें :-

- i) शनि का उच्चबल कितना होगा यदि वह 110 अंश पर स्थित है?
- ii) सम राशि स्थित ग्रह को ----- षष्ट्यांश का सप्तवर्गीय बल प्राप्त होता है।
- iii) उच्च के वर्गोत्तम गुरु को ----- षष्ट्यांश का युग्मयुग्म बल प्राप्त होता है।
- iv) एक जन्मांग में बुध तीसरे भाव में वृषभ राशि में 17 अंश पर स्थित है। उसे कितना द्रेष्कोण बल प्राप्त होगा?
- v) यदि किसी जातक का जन्म मध्य रात्रि में होता है तो मंगल ग्रह को ----- षष्ट्यांश का नतोन्नत बल प्राप्त होता है।
- vi) होरा अधिपति को वर्ष अधिपति से कम बल प्राप्त होता है
- vii) अधिकतम चेष्टा बल प्राप्त करने के लिए किसी ग्रह की पृथ्वी के संदर्भ में स्थिति कहाँ होनी चाहिए?
- viii) ग्यारहवें भाव मध्य यदि वृषभ राशि में पड़ता हो तो कितना भाव दिग्बल प्राप्त होगा?
- xi) यदि नौवा भाव मध्य जलचर राशि में स्थित हो तो कितना भाव दिग्बल प्राप्त होगा?
- x) यदि गुरु चंद्रमा से 120 अंश पर स्थित है तो गुरु का चंद्रमा पर कितना दिक् बल होगा?

2. निम्न जन्मांग के आधार पर निम्न की गणना करें :-

जन्म तिथि 1.12.1973, 20.25 घंटे, दिल्ली

लग्न : मिथुन 28:33, सूर्य : वृश्चिक 15:47, चन्द्र : मकर 29:28,

मंगल : मेष 02:01, बुध : तुला 26:29, गुरु : मकर 14:54,

शुक्र : मकर 01:30, शनि (व) : मिथुन 09:28, राहु : धनु 05:13,

केतु : मिथुन 05:13

- i) सूर्य के उच्चबल की गणना करें।
- ii) बुध के युग्म युग्म बल की गणना करें।
- iii) चंद्रमा के पक्ष बल की गणना करें।
- iv) मंगल के केन्द्र बल की गणना करें।
- v) गुरु के द्रेष्कोण बल की गणना करें।

3. भाव बल के कौन-कौन से भाग है? प्रश्न दो में दिए जन्मांग के लिए भाव दिग्बल की गणना करे (राशि मध्य को भाव मध्य ही माने)।

4. इष्टफल व कष्टफल का दशा/अन्तरदशा फलादेश में किस प्रकार प्रयोग होता है?
5. निम्न में किन्हीं 3 पर टिप्पणी लिखें :-
- भाव दिग्बल
 - ग्रह दिग्बल
 - अयन बल
 - चेष्टा बल

भाग-II (भाव निर्णय)

6. किन्हीं दो का उत्तर दे :-
- राशि कुण्डली व भाव कुण्डली में अंतर बताएं। क्या आप मात्र भाव कुण्डली पर आधारित रह सकते हैं।
 - पंचम भाव स्थित गुरु के क्या परिणाम होंगे यदि वह उच्च, नीच, मूल त्रिकोण या स्वराशि में स्थित हो?
 - षष्ठम, अष्टम और द्वादश भावों की महत्ता पर चर्चा करें।
7. निम्न जन्माग के सप्ताश और दशाशं कुण्डली का विवेचन करें :-
- लग्न : तुला 4:46, सूर्य : मीन 13:11, चन्द्र : कुम्भ 5:45,
मंगल : मकर 17:28, बुध : मीन 20:25, गुरु : तुला 20:53,
शुक्र : मेष 11:48, शनि : मेष 12:49, राहु : मेष 17:33
केतु : तुला 17:33
8. निम्न घटनाओं को जमांग से किस प्रकार देखते हैं :-
- धन लाभ
 - दुर्घटनाएँ
 - विद्यार्जन में रुकावट
 - संतानहीनता
 - बहुविवाह
9. निम्न कुण्डली का अध्ययन कर कारण सहित समझाएं :-
- दशम भाव चर्चा करें। जातक को कार्य क्षेत्र में क्या उपलब्धि प्राप्त हुई होगी?
 - क्या जातक अपने जन्म स्थान पर अथवा विदेश में जाकर बस गया है?
- 5.5.1916, 5.30 प्रातः, फरीकोट, दशा शेष : मंगल 6 व 4 मा 22 दि.
लग्न : मिथुन 6:26, सूर्य : मेष 21:35, चन्द्र : वृष 24:29,
मंगल : कर्क 27:12, बुध : वृष 11:09, गुरु : मीन 26:48,
शुक्र : मिथुन 6:40, शनि : मिथुन 19:26,
राहु : मकर 9:23, केतु : कर्क 9:23
10. प्रत्येक षोडश वर्ग से किन विषयों पर जानकारी प्राप्त की जा सकती है? इन वर्ग कुण्डलियों से विभिन्न भावों के फलादेशों में किस प्रकार मदद मिलती है? क्या मात्र इन्हें प्रयोग किया जा सकता है?